

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये एकाननरतितमं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীযে একোননরতিতমং দশকম্ ॥

বৃকাসুররধরণনম্

রমাজানে জানে যদিহ তর ভক্তেষু রিভরো
ন সদ্যস্পদ্যস্তদিহ মদকৃত্ত্বাদশমিনাম্।
প্রশান্তিং কৃৎরৈর প্রদিশসি ততঃ কামমখিলং
প্রশান্তেষু ক্ষিপ্রং ন খলু ভরদীযে চ্যুতিকথা ॥ 89.1 ॥

সদ্যঃ প্রসাদরুষিতান্ রিধিশঙ্করাদীন্
কেচিদ্ভিভো নিজগুণানুগুণং ভজন্তঃ।
ভ্রষ্টা ভরন্তি বত কষ্টমদীর্ঘদৃষ্ট্যা
স্পষ্টং বৃকাসুর উদাহরণং কিলাস্মিন্ ॥ 89.2 ॥

শকুনিজঃ স তু নারদমেকদা
ৎররিততোষমপৃচ্ছদধীশ্বরম্।
স চ দিদেশ গিরীশমুপাসিতুং
ন তু ভরন্তমবন্ধুমসাধুষু ॥ 89.3 ॥

তপস্তপ্ত্বা ঘোরং স খলু কুপিতঃ সপ্তমদিনে
শিরঃ ছিৎরা সদ্যঃ পুরহরমুপস্থাপ্য পুরতঃ।
অতিক্ষুদ্রং রৌদ্রং শিরসি করদানেন নিধনং
জগন্নাথাদ্বব্রে ভরতি রিমুখানাং ক্ল শুভধীঃ ॥ 89.4 ॥

মোক্তারং বন্ধমুক্তো হরিণপতিরির প্রাদ্রবৎসোহথ রুদ্রং
দৈত্যাদ্ভীত্যা স্ম দেবো দিশি দিশি বলতে পৃষ্ঠতো দত্তদৃষ্টিঃ।

तूष्ठीके सर्रलोके तर पदमधिरोक्क्युत्तुमुद्गीक्क्य शर्रं
दुरादेराग्रतस्त्रुं पटूरटूरपुषा तस्त्रिषे दानराय ॥ 89.5 ॥

भद्रं ते शाकुनेय ब्रमसि किमधुना
एरं पिशाचस्य राचा
सन्देहश्चेन्मदुक्तेौ तर किमु न करो -
ष्यस्त्रुलीमस्र मौलौ।
इत्थं एरद्वाक्यमुटः शिरसि कृतकरः
सोहपतच्छिन्नपातं
ब्रंशो हेरं परोपासितुरपि च गतिः
शूलिनोहपि एरमेर ॥ 89.6 ॥

डूणुं किल सरस्त्रतीनिकटरासिनस्त्रापसा -
स्त्रिमूर्तिषु समादिशन्नधिकसद्भुतां रेदितुम्।
अयं पुनरनादरादुदितरुद्करोषे रिधौ
हरेहपि च जिहिंसिषौ गिरिजया धृते एरामगां ॥ 89.7 ॥

सुषुं रमाक्कडुरि पक्कजलोचनं एरां
रिप्रे रिनिष्त्रति पदेन मुदोत्थितस्त्रुम्।
सर्रं ऋमस्त्र मुनिरर्य भरें सदा मे
एरंपादचिह्मिह डूषणमित्यरादीः ॥ 89.8 ॥

निश्चित्य ते च सुदृटं एरयि बद्रुभाराः
सारस्त्रता मुनिररा दधिरे रिमोक्कम्।
एरामेरमच्युत पुनश्च्युतिदोषहीनं
सत्त्रोच्छयैकतनुमेर रयं भजामः ॥ 89.9 ॥

जगत्सृष्ट्यादौ एरां निगमनिरहैर्रन्दिभिरि
स्त्रुतं रिष्त्रेण सच्चिंपरमरसनिर्द्वैतरपुषम्।

परान्नानं डूमन् पशुपरनिताभाग्यनिरहं
परीतापशान्ते परनपुरवासिन् परिभजे ॥ 89.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये एकोननरतितमं दशकं समाप्तम् ॥